शुष्क वन अनुसंधान संस्थान में अन्य पणधारियों (Other Stakeholders) के लिए दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान में अन्य पणधारियों (other stakeholders) के लिए "वानिकी एंव आजीविका के संसाधन" विषय पर दिनांक 8 से 10 अक्तूबर 2018 तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की वानिकी प्रशिक्षण एवं क्षमता वर्धन (Forest Training and Capacity Building) की "अंबरेला स्कीम" के अंतर्गत अन्य पणधारियों (other stakeholders) के लिए "वानिकी एवं आजीविका के संसाधन" विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें पंचायती राज संस्था के प्रतिनिधि सरपंच, वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति सदस्य, जय- नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के स्काउट रोवर, ईको क्लब के प्रभारी, जलग्रहण विकास दल के सदस्य, शिक्षक, स्वयं सेवी संस्था के प्रतिनिधि, प्रगतिशील किसान सहित 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम दिन उदघाटन सत्र में मुख्य अतिथि श्री आर. के. जैन, भा.व.से., वन संरक्षक, जोधपुर ने कहा कि प्रशिक्षण का विषय समसामयिक एवं महत्वपूर्ण है, वनों की क्षमता अनुसार ही वनों का उपयोग सतत हो। उन्होंने कहा कि वनोत्पाद बेकार न जावें, उनका बेहतर उपयोग हो, आजीविका बढ़ावें। उन्होंने केर जैसे वृक्ष उत्पाद का जिक्र करते हुए बताया कि वनोत्पाद का बेहतर तरीके से उपयोग हो। संस्थान की समूह समन्वयक (शोध) डॉ. रंजना आर्या ने कहा कि वनों के लिए काम और अच्छा कर सकें, जो खुद हमनें (वन विज्ञान का अनुसंधान काम) किया है वो आपके माध्यम से जन साधारण तक पहुंचाएँ, उम्मीद है

कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आपके लिए और हमारे लिए नयी रोशनी लेकर आयेगा , हम साथ जुड़ कर वानिकी को और ऊंचाइयों तक ले जाएँगे। इससे पूर्व विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी , भा.व.से. ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का परिचय कराते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम की विषय-वस्तु की जानकारी दी।

पहले दिन तकनीकी सत्र में वैज्ञानिक, डॉ. जी. सिंह ने अपने संभाषण में "वानिकी उत्पादन बढ़ाने हेतु प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन " (Natural Resource Management for Enhancing Forestry Production) विषय पर विस्तृत जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दी। श्रीमती संगीता त्रिपाठी , सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, ने अकाष्ठ वनोपज़ एवं उनका मूल्य संवर्धन (Non Timber Forest Produce and its Value Addition) के बारे में जानकारी दी। इसके बाद वैज्ञानिक , डॉ. तरुण कान्त ने "उत्तक संवर्धन तकनीक की आर्थिकी एवं जैवभार उत्पादन में इसकी भूमिका "(Economies of Tissue Culture Techniques and Its Role in Biomass Production) के बारे में जानकारी दी। केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI) जोधपुर के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अखत सिंह ने "फलदार पेड़ों के पौधारोपण के द्वारा आय बढ़ाना " (Enhancement of Income through Plantation of Fruit Trees) पर संभाषण दिया । वैज्ञानिक , डॉ. एन. के. बोहरा ने "औषधीय पौधों की कृषिकरण तकनीक और इनसे आय " (Cultivation Practices and Income through Medicinal Plants) के बारे में बताया। द्वितीय दिवस को प्रशिक्षणार्थियों को फील्ड भ्रमण पर ले जाया गया। मेहरानगढ़ पहाड़ी पर्यावरण विकास समिति द्वारा विकसित औषधि-उद्यान का भ्रमण कर प्रशिक्षणार्थियों ने विभिन्न औषधीय पौधों के वृक्षारोपण एवं बंजर पहाड़ी क्षेत्र को कैसे जल एवं मृदा संरक्षण द्वारा वृक्षारोपण से पुनर्वासित किया जा सकता है, इस कार्य का अवलोकन किया। विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी भा.व.से. ने भ्रमण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को वानिकी, जल एवं मृदा संरक्षण के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी। समिति के श्री प्रसन्नपुरी गोस्वामी ने औषधि उद्यान विकास के लिए जल , मृदा संरक्षण तथा वृक्षारोपण हेतु ली गयी विभिन्न गतिविधियों से संबन्धित जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दी । इस अवसर पर औषधि उद्यान में अंजन का पौधा भी रोपित किया गया। इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों ने आफरी के प्रायोगिक क्षेत्र , गंगाणी का भ्रमण किया जहां श्री रतनाराम लोहरा, तकनीकी अधिकारी ने लवणीय भूमि के सुधार हेतु किए गए प्रायोगिक परीक्षण वृक्षारोपण के लिये की गयी विभिन्न गतिविधियों की विस्तृत जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दी। श्री उमाराम चौधरी ने भ्रमण के दौरान लवणीय भूमि सुधार संबंधी कार्यों की जानकारी दी। प्रशिक्षणार्थियों ने संस्थान के विस्तार एवं निर्वचन केंद्र का भ्रमण भी किया जहां श्री उमाराम चौधरी ने वहाँ प्रदर्शित शोध कार्यों संबंधी सूचनाएँ एवं सामग्री की जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दी।

इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों ने संस्थान की प्रायोगिक एवं उच्च तकनीक पौधशाला का भ्रमण किया। श्री सादुलराम देवड़ा, तकनीकी अधिकारी ने नर्सरी प्रबंधन संबंधी जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दी। भ्रमण के दौरान श्री उमाराम चौधरी ने नर्सरी प्रक्रिया से संबन्धित विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी दी ।

भ्रमण कार्यक्रम में श्री धानाराम, तकनीकी अधिकारी एवं श्री महिपाल बिशनोई, तकनीकी अधिकारी का सहयोग रहा।

प्रशिक्षण के तीसरे दिन प्रशिक्षणार्थियों को केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI) से सेवानिवृत प्रधान वैज्ञानिक डॉ. जी. सी. तिवारी ने मूल्य संवर्धन एवं गोंद उत्पादन से आजीविका में बढ़ोतरी (Enhancement of Livelihood through Value Addition and Gum Production) के बारे में व्याख्यान दिया। डॉ. रंजना आर्या वैज्ञानिक एवं समूह समन्वयक (शोध) ने "बंजर भूमि से चारा उत्पादन (Fodder Production Form Waste Lands) के बारे में जानकारी दी। श्री रमेश मालपानी , उप-वन संरक्षक एवं नर्सरी प्रभारी ने गुणवत्ता-युक्त रोपण सामग्री उत्पादन में रोजगार (Employment in Producing Quality Planting Material) के बारे में प्रशिक्षणार्थियों को बताया। डॉ. बिलास सिंह , सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, ने "कृषि वानिकी के द्वारा आजीविका में सहयोग (Livelihood Support Through Agroforestry) पर व्याख्यान दिया। श्री उमाराम चौधरी , प्रभागध्यक्ष विस्तार प्रभाग ने "सतत विकास लक्ष्य" (Sustainable Development Goals) के बारे में प्रशिक्षणार्थियों को बताया।

प्रशिक्षणार्थियों से फीडबैक भी प्राप्त किया गया।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि श्री आर. एस. शेखावत , (भा. व. से.) अतिरिक्त प्रधान मुख्य संरक्षक थे। इस अवसर पर श्री शेखावत , संस्थान निदेशक, डॉ. आई. डी. आर्य , समूह समन्वयक (शोध) डॉ. रंजना आर्या ने प्रशिक्षणार्थियों से प्रशिक्षण से प्राप्त उनके ज्ञान के बारे में विचार विमर्श भी किया। प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. बिलास सिंह, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने किया। श्रीमती कुसुमलता परिहार, तकनीकी अधिकारी ने धन्यवाद दिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में डॉ. बिलास सिंह , सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी , श्रीमती कुसुमलता परिहार, तकनीकी अधिकारी , श्री महिपाल बिशनोई , तकनीकी अधिकारी , श्री धानाराम , तकनीकी अधिकारी , श्रीमती मीता सिंह तोमर, तकनीशियन एवं श्री तेजाराम, का योगदान रहा।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान जोधपुर
तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

Packing of Pickle and distribution to SHG Members by
Ms. Vandita Ranawat, IFS Probationer, Sirohi

How Do Plants Reproduce & Propagate?

PRODUCTS

DOMINANT FOREST
TYPES OF RAJASTHAN

DOMINANT FOREST
TYPES OF RAJASTHAN

Models of tree integration
1. Protection forest: shelterbelt, windbreak and strip of woodland
2. Plantation type: traditional forest and tree cultivation for timber
3. Trees with agriculture/grass and animals,
4. Woodland for Commercial

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान में अन्य पणधारियों (other stakeholders) के लिए "मृदा एवं जल संरक्षण में वनों की भूमिका" विषय पर दिनांक 11 से 13 अक्तूबर तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान , जोधपुर द्वारा पर्यावरण , वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की वानिकी प्रशिक्षण एवं क्षमता वर्धन (Forestry Training and Capacity Building) की "अंबरेला स्कीम" के अंतर्गत अन्य पणधारियों (other stakeholders) के लिए मृदा एवं जल संरक्षण पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति के सदस्य , रोवर्स, शिक्षक, इको क्लब

के सदस्य, जल ग्रहण विकास दल के सदस्य , राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवक , प्रगतिशील कृषक, रिसर्च स्कॉलर, विद्यार्थी, स्वयं सेवी संस्था के सदस्य सहित कुल 35 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के पहले दिन उदघाटन अवसर पर बोलते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. आई. डी. आर्य ने मृदा एवं जल संरक्षण के संदर्भ में कहा कि मिट्टी एवं जल को किस तरह से उपयोग में ला सकें , वर्षा के पानी को किस तरह संग्रहित कर सकें ताकि लंबे समय तक काम में ला सकें, कौन से पेड़ लगाएँ, पेड़ लगाकर मिट्टी को उपजाऊ बना सके, सीखें और आगे जानकारी दें। संस्थान की समूह समन्वयक शोध डॉ. रंजना आर्या ने कहा कि मृदा एवं जल संरक्षण का विषय अहम है , शुष्क क्षेत्रों में वनों को बढ़ाना है , मृदा वन बनाने में मदद कर सकते हैं। विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी ने प्रशिक्षण की विषय-वस्तु की जानकारी दी । डॉ. बिलास सिंह ने कार्यक्रम का संचालन किया।

तकनीकी सत्र में डॉ. जी. सिंह ने अपने संभाषण में अवक्रमित भूमि के पुनर्वासन के लिए मृदा एवं जल संरक्षण (Soil and Water Conservation to Restoration of Degraded Land) विषय पर विस्तृत जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दी। इसके बाद केंद्रीय भूमि-जल बोर्ड (GWB) जोधपुर के वैज्ञानिक डॉ. रामाकिशन ने राजस्थान में भू-जल की वर्तमान स्थिति (Present Status of Ground Water in Rajasthan) की जानकारी दी। केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI) के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. आर. के. गोयल ने वन/ पौधारोपण में जल उपयोग क्षमता द्वारा जल संरक्षण (Conserving Water by Improving Water Use Efficiency In Forest Plantation) पर व्याख्यान दिया। संस्थान की डॉ. रंजना आर्या वैज्ञानिक एवं समूह समन्वयक (शोध) ने "क्षारीय एवं लवणीय भूमि सुधार के लिए वन पौधारोपण (Forest Plantation for Improving Saline and Sodic Soil) के बारे में जानकारी दी। डॉ. बिलास सिंह, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने " जल एवं मृदा संरक्षण में कृषि वानिकी की भूमिका " (Role of Agroforestry in Soil and Water Conservation) पर व्याख्यान दिया।

प्रशिक्षण के दूसरे दिन प्रशिक्षणार्थियों को फील्ड भ्रमण करवाया गया। भ्रमण के प्रारम्भ में मेहरानगढ़ पहाड़ी पर्यावरण विकास समिति द्वारा विकसित वनौषधि उद्यान का अवलोकन कर मृदा एवं जल संरक्षण के विभिन्न कार्यों की जानकारी ली। विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी ने मृदा एवं जल संरक्षण के विभिन्न आयामों के बारे में व्यवहारिक जानकारी दी। समिति के श्री प्रसन्नपुरी गोस्वामी ने औषधीय उद्यान में संपादित करवाए गए मृदा जल संरक्षण सहित वृक्षारोपण कार्यों की जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को कराई। इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों को आफरी के प्रायोगिक क्षेत्र गंगाणी का भ्रमण कराया गया जहां श्री रतनाराम लोहरा (तकनीकी अधिकारी) ने लवणीय भूमि पर संस्थान द्वारा भूमि सुधार हेतु किए गए विभिन्न परीक्षणों की

विस्तृत जानकारी दी। श्री उमाराम चौधरी ने लवणीय भूमि सुधार हेतु किए गए कार्यों के भ्रमण के दौरान भूमि सुधार के पहलुओं की जानकारी करवायी।

प्रशिक्षणार्थियों ने संस्थान की प्रायोगिक एवं उच्च तकनीक पौधशाला का भ्रमण किया जहां श्री सादुलराम देवड़ा ने नर्सरी प्रबंधन की विभिन्न प्रक्रियाओं की जानकारी दी। प्रशिक्षणार्थियों ने उच्च-तकनीक पौधशाला तथा औषधीय पौधों के जर्मप्लाज्म बेंक का भी अवलोकन किया। श्री उमाराम चौधरी ने भ्रमण के दौरान नर्सरी एवं औषधीय पौधों इत्यादि से संबन्धित जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को कराई। प्रशिक्षणार्थियों ने माचिया जैविक उद्यान का भ्रमण कर विभिन्न वन्य जीवों एवं उद्यान विकास के लिए रोपी गयी विभिन्न वृक्ष प्रजातियों/कार्यों की जानकारी ली। भ्रमण कार्यक्रम में श्री धानाराम, तकनीकी अधिकारी का सहयोग रहा।

प्रशिक्षण के तीसरे दिन केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI) जोधपुर के वैज्ञानिक डॉ. एम. पाटीदार ने शुष्क क्षेत्रों में स्व-स्थाने जल संरक्षण द्वारा चारा उत्पादन में वृद्धि (Enhance Fodder Productivity through *In situ* water conservation in dry lands) पर संभाषण दिया। संस्थान के डॉ. जी. सिंह, वैज्ञानिक ने टिब्बा स्थिरीकरण एवं वायु अपरदन नियंत्रण (Sand dune Stabilization and Wind Erosion Control) पर संभाषण दिया। डॉ. बिलास सिंह ने शुष्क क्षेत्रों में जल उपलब्धता वृद्धि (Enhancing Water Availability in Dry Areas) के बारे में जानकारी दी। CAZRI के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभागाध्यक्ष डॉ. प्रवीण कुमार ने राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में मृदा पोषक तत्वों के प्रबंधन (Management of Soil Nutrient in Arid Region of Rajasthan) पर जानकारी दी। वन मण्डल, उदयपुर (दक्षिण) की वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति के प्रतिनिधि ने अपने (वन मण्डल के) जल एवं मृदा संरक्षण कार्यों को वीडियो द्वारा दिखाया। श्री उमाराम चौधरी , भा.व.से., प्रभागाध्यक्ष विस्तार प्रभाग ने सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals) की जानकारी दी। प्रशिक्षणार्थियों ने संस्थान के विस्तार एवं निर्वचन केंद्र का भी भ्रमण किया जहां डॉ. बिलास सिंह ने वहाँ प्रदर्शित शोध संबंधी सूचनाओं एवं सामग्री की जानकारी दी। सभी संभागियों से फीडबैक प्राप्त किया गया।

समापन सत्र के अवसर पर भी प्रशिक्षणार्थियों ने तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम पर विचार रखे। समापन सत्र के मुख्य अतिथि भारतीय वन सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी श्री जसवंत सिंह नाथावत ने अच्छे जंगल की व्याख्या करते हुए बताया कि घास , झाड़ी, मध्य वितान (Middle Storey) / उंचें पेड़ ये चारों स्तर विद्यमान हो तो इस तरह के अच्छे जंगल से मृदा भी संरक्षित रहेगी , जल भी संरक्षित रहेगा। अगर अच्छा जंगल है तो / अगर वन है तो मृदा एवं जल सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि जरूरत से ज्यादा दोहन के मद्देनजर जो भी बचा है उसको सुधारें और इस हेतु वृक्ष बहुत उपयोगी है।

विशिष्ट अतिथि श्री रघुवीर सिंह शेखावत , भा.व.से. अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक , जोधपुर ने कहा कि बहुमूल्य मृदा और जल बहुत ही महत्वपूर्ण है , इसके लिए सार्वजनिक जगहों पर आवरण रखने की जरूरत है , वृक्षों का आवरण होगा तो पानी का समाधान होगा। उन्होंने बताया कि वृक्ष , मृदा एवं जल का सीधा संबंध है , उन्होंने कहा कि केर, जाल जैसी प्राकृतिक विरासत को न केवल बचाना है बल्कि आगे बढ़ाना है। उन्होंने इस हेतु जागरूकता की आवश्यकता प्रतिपादित की। संस्थान के निदेशक डॉ. आई. डी. आर्य ने कहा कि प्रशिक्षण का विषय बहुत ही महत्वपूर्ण है , मृदा और जल नहीं हुआ तो आगे आने वाली पीढ़ियों को मुश्किल होगी , प्रशिक्षण का उद्देश्य मृदा एवं जल के बारे में बताना है , उन्होनें प्रशिक्षणार्थियों का आह्वान किया कि जो कुछ सीखा है, उसे अन्य लोगों को भी बतायें, सिखाएँ।

इससे पूर्व विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी ने तीन दिन की प्रशिक्षण गतिविधियों की जानकारी दी। डॉ. बिलास सिंह ने समापन कार्यक्रम का संचालन किया। प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र भी वितरित किए गए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में डॉ. बिलास सिंह , सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी , श्रीमती कुसुमलता परिहार, तकनीकी अधिकारी श्री महिपाल विशनोई , तकनीकी अधिकारी , श्री धानाराम , तकनीकी अधिकारी , श्रीमती मीता सिंह तोमर, तकनीशियन एवं श्री तेजाराम का योगदान रहा।

RAINFALL

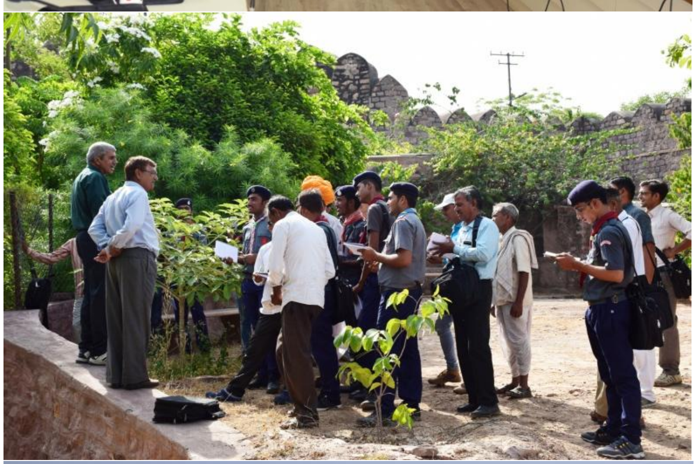

SAND DUNE STABILIZATION AND LIVELIHOOD IMPROVEMENT
ARID FOREST RESEARCH INSTITUTE